प्रातः क्लास 24-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठरूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चों अपने को आत्मा समझ कर बैठो। यह एक बाप ही समझाते हैं। और कोई मनुष्य किसको भी समझा न सके। अपने को आत्मा समझो यह 5000 वर्ष बाद बाप ही समझाते हैं। कब सिखलाते हैं, यह भी तुम बच्चे जानते हो। बाकी तो हैं अंधे के औलाद अंधे। किसको पता नहीं है कि यह पुरुषोत्तम संगम युग है। तुम बच्चों को यह याद रहे कि हम पुरुषोत्तम संगम युग पर हैं। तो यह भी मन्मनाभव ही है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। क्योंकि अभी तुमको वापस जाना है। 84 जन्म अभी पूरे हुये। अभी सतोप्रधान बन वापस जाना है। कोई तो बिलकुल ही याद नहीं करते। बाप तो हरेक के पुरुषार्थ को अच्छी रीत जानते हैं। उस में भी खास यहां है अथवा बाहर में, बाबा जानते हैं। भल यहीं बैठ देखता हूं परन्तु मीठे2 जो सर्विस एक्टिव बच्चे हैं उनको याद करता हूं। उन्हों को देखता हूं। एक एक को देखते हैं यह किस प्रकार का फूल है। इन में क्या2 गुण हैं। कोई तो ऐसे भी हैं जिन में कोई गुण नहीं है। मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं। अभी ऐसे को बाबा देख कर क्या करेंगे। बाप तो है ही चकमक, पवित्र आत्मा। सो तो जरूर कशिश करेंगे। परन्तु अन्दर जानते तो हैं ना इन में क्या गुण है। क्या सर्विस करते हैं। सभी को अपना आक्युपेशन तो बाप के बताना ही है। बाप अपना सारा पोतामेल बताते हैं ना। तो बच्चे भी बतावें ना। बाप तो सभी बतलाते हैं। हम तुमको विश्व का मालिक बनाने आये हैं फिर जो जैसा पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ और जो करते हैं वह भी पता होना चाहिए ना। बाबा लिखते हैं सभी का आक्युपेशन लिखवा कर भेजो। जो चुस्त समझदार हैं ब्राह्मणियां होती है वह सभी लिखवा कर भेजती हैं। क्या धंधा आदि करते हैं। कितनी आमदनी है। बाप अपना सभी कुछ बताते हैं ना। और सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान भी सुनाते हैं। सभी की अवस्था को जानते हैं। एक एक को देखते हैं। जैसे कि मैं बगीचे में खड़ा हूं। यहां की भेंट फिर वहां के फूलों से करता हूं। किसम2 के वैराईटी फूलों के हैं ना। (एक फूल दिखाना) यह देखो कैसा रायल फूल है। एकदम खुशी में जैसे मापता ही नहीं। खुशबूर इन में ऐसी है जो इतनी खुल नहीं सकती। फिर जब सारा खुल जावेगा तो फिर फर्स्ट क्लास खुशबूर हो जावेगा। तुम भी लायक बन जावेंगे। ऐसे ल0ना0 बनने का। तो बाप देखते रहते हैं। ऐसे नहीं कि सभी को सर्चलाईट देते हैं। जो जैसा है वैसे कशिश करते हैं। सब सर्चलाईट लेने की। जिन में कोई गुण नहीं। वह क्या कशिश करेंगे। फिर ऐसे ही वहां चल करे पाई-पैसे के पद पावेंगे। तो बाबा हर एक के गुणों को देखते हैं। और फिर बहुत प्यार भी करते हैं। प्यार में खुशी में नयन गिले हो जाते हैं। यह सर्विस एक्टिव बच्चा कितनी मेहनत करता है। इनको सर्विस गिर आराम नहीं। कोई तो सर्विस करना जानते ही नहीं हैं। योग में बैठते भी नहीं। ज्ञान को धारणा ही नहीं होती। बाबा समझते हैं यह क्या पद पावेंगे। कोई भी छिप नहीं सकता। बच्चे तो सालम बुद्धि हैं सेन्टर सम्भालते हैं उनको एक एक का पोतामेल भेजना चाहिए। तो बाबा समझे कहां तक पुरुषार्थी हैं। बाबा तो ज्ञान का सागर है। बच्चों को ज्ञान देते हैं। कौन कितना ज्ञान धारते हैं, गुणवान बनते हैं वह ..ट मालूम पड़ जाता है। बाबा डिप्लोमेट भी नम्बरवन है। पत्थर बुद्धि को भी बहुत प्यार से देखेंगे। ताकि इनको भासना न आवे कि बाबा को मेरे लिए कुछ होता है। बाबा प्यार तो सभी को करते हैं ना। गीत भी है ना तेरे कांटों से भी तेरे फूलों से भी प्यार..। इसलिए बाबा ने कहा था अच्छे2 गीत जो वह टेप में भर दो। फिर रिकार्ड की दरकार नहीं रहेगी। फिर भी बाजारी है ना। परन्तु जब कोई करे। बेहद का बाप कहे और फट से करे ऐसा बच्चा कोई मुश्किल है। मैं तो कहूंगा एक भी नहीं। हां पिछाड़ी में होंगे। बाबा ने कहा और किया। यह समझते नहीं हैं, क्योंकि यह गुप्त है ना। बहुत जन्मों के अन्त में आकर प्रवेश किया है। तो घड़ी अपने समान ही इनको समझ लेते हैं। शिव बाबा ने कहा तो फट से करना चाहिए। बाप कहे और फट से करे तब कर्मातीत अवस्था हो। ऐसे बाप के साथ लव भी कितना चाहिए। फेरन करे

तो बाबा भी समझे इनका कितना लव है। उनको कशिश भी होगी। उनकी कशिश ऐसी है जो एकदम चटक जावेंगे। परन्तु जब तक कट नहीं निकली है तो कशिश भी होती नहीं। ऐ एक एक को देखता हूं। बाबा को तो सर्विस एक्टुल चाहिए ना। बाप तो सर्विस के लिए ही आये हैं ना। अपनी सर्विस करते हैं, पतितों को पावन बनाते हैं। तुम समझते हो परन्तु मनुष्य समझते थोड़े ही हैं। क्योंकि अभी तुम हो बहुत थोड़े। जब तक योग युक्त न होंगे तब तक कशिशन होगी। वह मेहनत बहुत ही थोड़े करते हैं। कोई न कोई बात में लटक मरते हैं। यह वह सतसंग नहीं है जो सुना वह सत्य। और सुन कर फिर दुसरों को सुनाने में लग गये। यह कोई शास्त्र आद तो नहीं है। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है ही गीता। न कि वेद। गीता में ही राजयोग है। विश्व का मालिकबनाने वाला तो बाप ही है ना। बच्चों को कहता रहता हूं गीता से भी प्रभाव निकलेगा। परन्तु जब इतनी ताकत भी हो। योगबल का जौहर बहुत अच्छा चाहिए। यह ही डिफीकट है। जिसमें बहुत2 कमजोर हैं। अभी ड्रामाअनुसार ऐम ऐम ऐम भी पड़ा हुआ है। बाबा इन्हें प्यार तो कर न सके। कहते हैं ना मिठरा घूर तो घूरारं। बाबा सिर्फ कहते हैं मुझे प्यार करो तो मैं भी करूं। यह है आत्मा का लव। एक बाप की ही याद में रहे। क्योंकि इस याद से ही विकर्म विनाश होंगे। कोई तो बिकुल याद ही नहीं करते। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग के कितने बड़े2 ब्र श्री श्री 108 कहलाने वाले हैं। तुम तो समझते हो यह बड़े हिरण्यकशियप हैं। भक्त लोग तो उन्हीं को गुरु ईश्वर समझ पांव धोकर पीते हैं। यहां तो वह बात नहीं। तुम जानते हो यह बाबा का रथ है। इन में शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। शिव बाबा थोड़े ही कहेंगे पैर धोकर पीओ। बाबा तो हाथ लगाने भी नहीं देते। यह तो पढ़ाई है ना। हाथ लगाने से क्याहोगा। जिन माताओं को विधवा बना कर जाते हैं वह भाईयों ही फिर उन्हीं को गुरु ईश्वर मान बैठे हैं। जितने भी सन्यासी हैं सभी घर बार छोड़ कर जाते हैं। विधवा बनाकर जाते हैं। सीढ़ी तो नीचे उतरते ही हैं। यह भी वह लोग आगे चल कर जानेंगे जब तुम्हारे में भी ताकतआ जावेगी। तुम बच्चे लिख भी सकते हो। परन्तु इतनी विशाल बुधि अभी बनी नहीं है। बोलो तुमको जो विधवा और आरफन बनाते हैं वह कैसे राजयोग सिखला सकते हैं। जो खुद घर-बार छोड़ आरफन विधवा बना देते हैं उनको ईश्वर समझ कर, उनके पांव धोकर पीते हैं। उसका हाल क्या हुआ नीचे उतरते ही जाते हैं। नहीं तो अन्दर में आना चाहिए हमारे हमजिन्स को यह विधवाबनाकर जाते हैं ऐसे को हम देखना भी नहीं चाहते। यह तो पूरे दुश्मन हैं बाप तो है सभी की सदगति करने वाला। वह लोगसदगति करते हैं। क्या स्त्री की सदगति की। परन्तु कुछ भी समझते नहीं। आसुरी बुधि है ना। कोटों में कोऊ ही निकलते हैं। कल्प पहले वाले। जो अच्छे समझ होंगे होंगे वह तो इनहों के मूंह भी देखने को नहीं करेंगे। माताएं तो उनके पिछाड़ी लड्डू हो पड़ती है। मिलता कुछ भी नहीं। भोली है ना। भोलानाथ बाप आकर भोलियों को उठाते हैं। वह गिराते हैं। यह चढ़ाते हैं। वह गिरा कर एकदम कमदख्त बना देते हैं। बाप बिलकुल ऊंच चढ़ाते हैं। मुक्ति जीवन मुक्ति में। बाप सिर्फ कहते हैं विकारों को छोड़ो। इस पर ही कितने हंगामे हुये हैं। गवर्मेन्ट के पास भी कुत रिपोर्टें जाती थी। कोई का आदमी गुम होगा। तो पहले यहां आवेंगे कि कहां छिपा कर न बिठाया हो। जैसे चर्च। यहां भी आर्यसमाजी है, जो दस पर अताब बांटते रहते हैं। यहां जादू से लगेगा। फिर घर नहीं लौटेंगे। सुन कर डर जाते हैं। पुरुष फिर भी बहादुर होते हैं। माताएं तो डर जाती हैं।

तो बाप कहते हैं अपने में देखो हमारे में क्या2 अवगुण हैं। रोज रात को देखो। व्यापारी रोज अपना हिसाब वाधे-घाटे का निकालते हैं ना। कितना समय हम अति प्यारे ते प्यारा मीठे ते मीठे बाप को जो हमको सुख का मालिक बनाते हैं उनको याद किया। देखोगे बहुत कम याद किया है तो आपे ही लज्जा आवेगी। यह क्या। ऐसे बाप को हमने याद नहीं किया। इससे तो डूब मरना अच्छा। परन्तु बाबा ऐसे थोड़े ही कहेंगे।

गुल2 कैसे बनेंगे। बाबा वन्डरफुल है ना। स्वर्ग भी है सारी सृष्टि में वन्डरफुल। कलियुगी मनुष्य तो स्वर्ग (लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम से कोई पूछेंगे ते तुम कहेंगे 5000 वर्ष हुये। कितना रात दिन का फर्क है। उन्हों की बुधि में क्या होगा ठिकरभित्तर। ऐसे बहुत ही ठोपे ठगते हैं। भक्त हो आकर ज्ञान लेंगे। जो बहुत2 भक्त है उन पर बाप कुर्बान जाते हैं। अति भक्ति की है ना। बाबा इस जन्म में भी गीता उठाता था औरना0 का चित्र। ल0 को तो मुक्त कर दिया चित्र से। देखा ल0 सो फिर दासी। झट दासी पनु से मुक्त कर दिया। तो कितनी खुशी रहती है। जैसे सतयुग में समझते हैं हम इस शरीर छोड़ कर जाकर दूसरा लेंगे। बाबा को बाबा को भी खुशी है हम जाकर मिचनु गोरा बनेंगे। पुरुषार्थ भी करते रहते हैं। भुपत में थोड़े ही बन जायेंगे। तुम भी अच्छी रीत बाप को याद करेंगे। तो वर्सा पावेंगे। कोई तो पढ़ते ही नहीं। देही गुण धारण भी नहीं करते। पोतामेल ही नहीं रखते। पोतामेल स्याई जो रखेंगे वह ऊंच बनने वाले होंगे। नहीं तो सिफ शो करेंगे। 15-20 रोज बाप फिर लिखना छोड़ देंगे। यहां तो परीक्षायें है सभी है गुप्त। हर एक का क्वालिफिकेशन बाप जानते हैं। बाबा का कहना फट से मानते हैं तो कहेंगे आज्ञाकारी परमान दरदार है। अभी तो बहुत ही काम चाहिए। कितने अच्छे बच्चे भी फारकती, डायवोर्स दे गये। यह किसको फारकती वा डायवोर्स थोड़े ही देंगे। यह तो ड्रामा अनुसार आये ही हैं बहुत बड़ा कैन्ट्रेक्ट उठाने। मैं सभी से बड़ा कैन्ट्रेक्टर हूं। सभी को गन2 बना कर वापस ले जाता हूं। तुम बच्चे जानते हो सिर्फ पतितों को पावन बनाने वाला कैन्ट्रेक्टर एक ही है। वह तुम्हारे सामने बैठे हैं। कोई को कितना निश्चय है कोई को तो फुल शो है। आज यहां है कल चले जावेंगे। चलन ऐसी है। अन्दर जरूर खावेंगा। हम बाबा के पास रहकर क्या करते हैं। सर्विस कुछ करते हो नहीं तो क्या मिलेगा। रोटी पकाना, सब्जी बनाना यह तो पहले भी करते थे। नई बात नहीं। सर्विस का रास्ता सबूत दो नाकि इतने को रास्ता बताया। बाबा तो जानते हैं। कशिश तो कोई को भी होगी। मेहतरानी को भी देखेंगे तो कशिश होगी। (शुरू में एक कुमेहतरानी आई थी हिम्मत सुनाना) ड्रामा बड़ा वन्डरफुल है। क्या2 होता है तुम प्रैक्टीकल में देखते हो। शास्त्रों में क्या2 लिख दिया है। कृष्ण आदि के चरित्र तो कुछ है नहीं। चरित्र है एक का। जो सर्व की सदगति करते हैं इन जैसा चरित्र कोई को हो न सके। चरित्र तो कोई चरित्र होना चाहिए। बाकी भगाना करना, यह कोई श्रेष्ठ चरित्र है क्या। यह तो और ही ग्लानी है। सर्व का सदगतिदाता एक ही बाप है। वह कल्प2 आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। कौन हिसाब तो दिखावे। भगवान वो ही ठिकर भित्तर में ठोक दिया है। कुत्ता बिल्ला तो फिर भी चैतन्य है। यह ठिकर भित्तर में कह देते। मिट्टी का गोला बना कर समझते हैं इन में भी भगवान है। तब तो पूजा आदि करते हैं। पूजा चैतन्य की जाती है या जड़ की? नाम रूप से न्यारी चीज उनको क्या पूजा करेंगे। जो कुछ कर के जाते हैं उनकी पूजा होती है। तो बच्चों को छी छी आदतें सभी बदलनी चाहिए। नहीं तो क्या मिलेगा। माशुक भी लक्षण देखकर आशुक होगा ना। आशुक उन पर होगा जो इनके लिए सर्विस करते होंगे। जो सर्विस ही नहीं करते वह क्या काम के। यह बातें बहुत ही समझने की हैं। बाप खुद समझाते हैं तुम महान भाग्यशाली हो। तुम्हारे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं। मैं स्वर्ग में तो जाते हैं परन्तु अपनी प्रारब्ध ऊंची बनानी चाहिए। कल्प-कल्पान्तर की बात है। स्वर्ग की भी अधम गति है नर्क की भी अधम गति होती है ना। पोजिशन तो कम हो जाता है ना। खुश न होना चाहिए कि जीमेला सो अच्छा। पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना चाहिए। सर्विस का सबूत चाहिए। कितने को आप समान बनाया है। तुम्हारी प्रजा कहां है। बाप टीचर तो सब की तकदीर बनाते हैं। परन्तु किसके तकदीर में भी हो ना। कृपा आशीर्वाद तो यह है। जो बाप अपना शान्तिधाम छोड़ कर पतित दुनिया, पतित शरीर में आते हैं। नहीं तो तुमको यह रचयिता और रचना की नालेज कौन सुनावे। यह भी किसकी बुद्धि में नहीं बैठता सतयुग में रामराज्य कलियुग में रावण राज्य है। रामराज्य में एकराज्य रावण राज्य में अनेकराज्य है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग नमस्ते। (बाकी रही हुई पायन्टस पीछे दूसरी में भेज देंगे।)